मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

ईएसआई अस्पताल लापरवाही से मौत	3
धान घोटाला बनाम दुष्यंत चौटाला	4
इंडियन इकनॉमी के डिजास्टर का साल	5
जनमत संग्रह है दिल्ली का नतीजा	6
कारीगरों के आईने से सूरजकुंड मेला	8

वर्ष 33 अंक 14 फ़रीदाबाद 16-22 फ़रवरी 2020 फोन -8851091460 ₹ 2.50

'शहर एक माह में साफ़ करो': एनजीटी
'न करें तो क्या कर लोगे' : नगर निगम

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 10-11 फ़रवरी को एनजीटी की तीन सदस्यीय टीम ने, अरबों रुपये के खर्च से बनते, इस स्मार्ट सिटी का दौरा किया। शहर की दुर्दशा एवं गंदगी को देख कर भड़की टीम ने नगर निगम अधिकारियों को आगामी एक माह में शहर की दशा सुधारने की चेतावनी देते हुए कड़ी सज़ा की धमकी भी दी।

एनजीटी की इस टीम में इसी शहर में सैशन जज रह चुके व हाई कोर्ट से सेवानिवृत जज प्रीतमपाल सिंह तथा हरियाणा की सेवा निवृत मुख्य सचिव उर्वशी गुलाटी भी थीं। कहने की जरूरत नहीं कि ये दोनों ही सदस्य राज्य के उच्चतम न्यायिक एवं प्रशासनिक पदों पर रह चुकने के चलते राज्य में प्रचलित न्यायिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था से पूर्णतया परिचित हैं।

इस सबके बावजूद नगर निगम के अधिकारियों पर इनकी धमकियों का कोई असर होता नहीं दिख रहा। निगम के भ्रष्ट

जस्टिस प्रीतम पाल

मुख्य सचिव उर्वशी गुलाटी

एवं निकृष्ट अधिकारियों ने अपनी सारी नौकरी इसी तरह की धमकियों व जवाबतलबियों में गुजारते हुये पदोन्नतियों के साथ-साथ जम कर धन बटोरा है और किसी का कुछ नहीं बिगड़ा। लगभग सभी अधिकारियों के गॉड फ़ादर (माई-बाप) किसी न किसी रूप में सरकार में मौजूद रहते हैं। इन्हीं के बल-बूते ये लोग नाकाबिल होते हुये नोकरी में लगे व पदोन्नतियां पाते चले गये; जब भी किसी कड़क अफ़सर ने इन्हें सूतना चाहा तो सत्ता में बैठे इनके गॉड-फ़ादरों ने उसी को चलता कर दिया।

विदित है कि नगर निगम आयुक्त का पद महीनों-महीनों तक खाली पड़ा रहता है और जब किसी की तैनाती होती भी है तो चार-छः महीने बाद, यानी कि जब तक वह इस निगम को समझने लायक बनता है उसका तबादला कर दिया जाता है। निगम के तीन सहआयुक्तों में से एक या दो पद तो सदैव खाली ही रहते हैं, इन खाली पदों पर निगम के ही नाकारा कर्मचारियों को बैठा दिया जाता है।

नगर निगम की कुल आय का अधिकांश इन्जीनियरिंग ब्रांच द्वारा विकास एवं रख-रखाव के नाम पर खर्च किया जाता है जिसका बड़ा भाग इन्जीनियरों, राजनेताओं व ठेकेदारों की जेब में समा जाता है। इसके चलते सड़क बन कर पूरी होने से पहले टूटने लगती है, पेय जल की पाइप लाइनें आये दिन कहीं न कहीं से फटी रहती हैं सीवर का गंद सड़कों-गलियों में भरा रहता है। सीवेज ट्रीटमेंट के लिये करोड़ों की लागत से बनाये गये एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) बेकार साबित हो रहे हैं। कूड़ा निस्तारण के नाम पर करोड़ों खर्च करने के बावजूद बंधवाड़ी मोड़ पर कूड़े का पहाड़ खड़ा कर दिया गया है।

असल में निगम के ये तमाम इन्जीनियर जिस काम के लिये भर्ती किये गये हैं, ये उसके लायक हैं ही नहीं। ये लोग केवल टेंडर जारी करके बिल पास करना व अपना कमीशन लेना जानते हैं। इससे फ़ालतू इनसे कोई उम्मीद करना ही व्यर्थ है।

एनजीटी की टीम द्वारा दी गयी कड़ी कार्यवाही की धमकी की किसी को कतई कोई परवाह नहीं। क्योंकि ये सभी जानते व समझते हैं कि न तो कोई एनजीटी उनकी नौकरी खा सकता, न उनकी कैद करा सकता और न ही उनकी नामी व बेनामी जायदादों को कुर्क करा सकता। एनजीटी ने पिछले दिनों ऐसे ही एक मामले में एक करोड़ 65 लाख का जुर्माना किया तो निगम ने भर दिया, धन की कमी पड़ने लगी तो निगम ने झट से अपनी कुछ व्यापारिक सम्पत्तियां नीलामी पर लगा दीं और जरूरत पड़े तो और कुछ बेच देंगे। मगर काम नहीं करना।

जिस तरह मोदी डंडे खाने के लिए पीठ को मजबूत कर सकता है लेकिन रोजगार की समस्या हल नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह निगम के इंजीनियर कारण बताओ नोटिस का जवाब तो दे देंगे, जुर्माने भरने के लिए निगम तक को बेच देंगे यह गन्दगी नहीं साफ करेंगे।

ईएसआई अस्पताल: डॉक्टर रत्नधीर थानेदारी की बजाय डॉक्टरी करें

फ़रीदाबाद (म.मो.) एनएच-3 स्थित ईएसआईसी के मेडिकल कॉलेज अस्पताल में तैनात डॉक्टर रत्नधीर मैडिकल अफसर है जो प्रशासनिक काम करते हैं। मरीज़ इनके पास अपनी चिकित्सा संबंधी, खास कर रैफ़र किये जाने वाले मामले लेकर आते हैं। लेकिन ये साहब उनकी समस्यायें सुलझाने की अपेक्षा हर वह थानेदारी प्रयास करते हैं जिससे समस्या और बढ़े।

मरीज़ों के प्रति इन पर दुर्व्यवहार एवं संवेदनहीनता का आरोप लगाते हुए मज़दूर नेता एवं ईएसआईसी रीजनल बोर्ड के सदस्य कामरेड बेचू गिरी ने अस्पताल के मासिक सुविधा समागम में बताया कि 7 फरवरी को उनकी मौजूदगी में डॉ. धीर ने एक 20 वर्षीय महिला मरीज़, जो अपनी किसी समस्या को लेकर इनके पास आई थी, से पूछा कि उसके पिता क्या करते हैं व उनका कितना वेतन है? महिला ने बताया कि एक छोटी वर्कशॉप में काम करते हैं तथा 16000 रुपये मासिक वेतन पाते हैं।

इसके बाद डॉ. साहब पूछते हैं कि वे कितने भाई-बहन हैं तथा कितना पढे हैं? महिला ने बताया कि पांच बहनें व सबसे छोटा एक भाई है तथा सभी बहनें ग्रेजुएट हैं और भाई अभी पढ़ रहा है। इस पर डॉक्टर साहब सवाल दागते हैं कि इतना कम वेतन पाने वाले मज़दूर ने इतने बच्चों को इतना कैसे पढ़ा दिया? अब वह बेचारी इस मूर्ख डाक्टर को क्या समझाती कि गरीब परिवार का हर सदस्य पढ़ाई के साथ-साथ कमाता भी है। वैसे भी डाक्टर के सामने इस तरह के मरीज जबान लड़ाने की हिम्मत नहीं कर पाते।

बेचू गिरी ने यह मामला सुविधा समागम में उठाया जहां अस्पताल के सभी विभागाध्यक्ष, मेडिकल सुपरिटेंडेंट व डीन आदि के अलावा खुद डॉ. धीर भी मौजूद थे और वे अपनी इस हरकत को नकार भी नहीं सके। इतना ही नहीं उन पर यह भी आरोप है कि वे रैफ़र होने वाले मरीज़ों पर बेजा दबाव इसलिये भी बनाते हैं ताकि मरीज़ को अपनी मन-मर्जी के व्यापारिक अस्पताल को

डॉक्टर रत्नधीर

मजदूर नेता बेचू गिरी

रैफ़र कर सकें जबकि ईएसआई निगम के स्पष्ट आदेश हैं कि मरीज़ को पैनल पर मौजूद अस्पतालों में से अपनी पसंद का अस्पताल चुनने का अधिकार है।

जानकार बताते हैं कि व्यापारिक अस्पतालों के एजेंट अपने-अपने अस्पतालों के लिये मरीज़ रूपी ग्राहक प्राप्त करने के चक्कर में घूमते रहते हैं। ऐसे में अपनी मन-मर्जी से रैफ़र करने वाले किसी भी डॉक्टर पर सांठ-गांठ का आरोप तो लग ही सकता है।

कामरेड गिरी बताते हैं कि डॉ. धीर का उक्त किस्सा कोई अपवाद नहीं है, वे रोज़ाना ऐसे ही कारनामे करते रहते हैं। एक बार एक श्रमिक अपने पिता के इलाज के लिये आया तो इन साहब ने पूछा कि पिता क्या करते हैं तथा कितना वेतन पाते हैं? श्रमिक ने कहा कि हुडा में काम करते हैं और 9000 मासिक वेतन पाते हैं। इस पर डॉ. धीर ने कानून झाड़ा कि जो पिता खुद 9000 पा रहा है वह इलाज के लिये अपने बेटे पर कैसे निर्भर हो सकता है? मतलब यह कि वह ईएसआई अस्पताल से बाहर जाये तथा कहीं और जाकर अपना इलाज कराये।

मामला गिरी के नोटिस में आया तो उन्होंने धीर को समझाया कि जब न्यूनतम वेतन ही 9000 हो गया है तो ईएसआई की निर्भरता सीमा भी बढ कर 9000 हो गयी है। सवाल यह पैदा होता है तो कि हर समय वहां गिरी या उन जैसा कोई भिड़ने वाला हो ही नहीं सकता तो ये डॉक्टर साहब मज़दूरों के साथ क्या करते होंगे? जाहिर है ऐसे में इनकी थानेदारी पूरे ज़ोर से मज़दूरों पर चलती ही होगी।

जानकार बताते हैं कि इनकी ओछी हरकतों से न केवल मरीज़ परेशान रहते हैं, बल्कि अन्य डॉक्टर व अधिकारी भी परेशान रहते हैं। आये दिन अनेकों मरीज़ इनकी शिकायतें लेकर अधिकारियों के पास खड़े रहते हैं जिन्हें सुनने व सुलझाने में उनका काफ़ी समय नष्ट होता है।

अस्पताल में कार्यरत अन्य डॉक्टरों व अधिकारियों को डराये रखने के लिये डॉ. धीर अपने दलित वर्ग से होने को भी कवच व हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इतना ही नहीं ईएसआईसी मुख्यालय में बैठे अपने जैसी मानसिकता रखने वाले उच्चाधिकारियों से भी इनकी सांठ-गांठ अच्छी है जिसके चलते ये साहब अस्पताल में कार्यरत डॉक्टरों व अधिकारियों के विरुद्ध मनगढ़ंत शिकायतें करते रहते हैं। इसके चलते यहां इनका अच्छा-खासा दबाव बना रहता है।

दुष्यंत चौटाला भाजपा सीएम बन सकते हैं?

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

सुनने में बड़ा अजीब व हैरतअंगेज लगता है। भला जेजेपी (जननायक जनता पार्टी) के सुप्रीमो यकायक भाजपा विधायक दल का नेता कैसे बन सकता है? मौजूदा दौर की राजनीति में कुछ भी असंभव नहीं है। जब भाजपा के मुकाबले चुनाव लड़ते वक्त चौटाला उसे गालियां देने के बावजूद उसके साथ गठबंधन कर सरकार में शामिल हो सकता है तो पूरी जजपा को ही भाजपा में विलय करने में क्या बुराई हो सकती है?

दिल्ली चुनावों के दौरान पीएम नरेन्द्र मोदी द्वारा मंच पर मौजूद चौटाला को अपना मित्र व उंचे नेता यूं ही नहीं कहा गया था। इससे उस अंदरूनी खिचड़ी की महक आती है जो भाजपा आला कमान व चौटाला के बीच पक रही है। दरअसल पिछले दिनों हुए हरियाणा विधानसभा के चुनावों ने भाजपा का यह भ्रम दूर कर दिया है कि वह जाटों को अपने से अलग करके हरियाणा जीत सकती है। जाटों के नाम पर उसके पास जो दिग्गज- बराला, अभिमन्यु, धनखड़ जो थे वे सब धराशायी हो गये। यानी उन्हें जाटों ने नकार दिया। ऐसे में भाजपा के लिए यह जरूरी हो गया कि वह जाटों के नये उभरते नेता को किसी भी कीमत पर पटाये। उसके लिए दुष्यंत चौटाला की अपने विधायक दल का नेता व सीएम बनाना कोई बड़ी बात नहीं रही बात खट्टर तथा विज की, तो ये कट्टर संघी हैं और पार्टी के आदेश पर कुछ भी कर सकते हैं, लेकिन पार्टी इन्हें वफादारी के इनाम के तौर पर और बहुत कुछ दे सकती है।

उधर दुष्यंत के सामने समस्या यह है कि पूर्व सीएम भूपेन्द्र सिंह हुड्डा चौटाला के विधायकों की तोड़-फोड़ में लगे हैं। यदि हुड्डा इसमें कामयाब हो जाते हैं तो चौटाला कहीं के भी न रहेंगे। आज के दिन चौटाला के विधायकों में भारी असंतोष पनप रहा है। क्योकि उन्हें लूट की मलाई से कोई वाजिब हिस्सा नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में कुछ भी हो सकता है। इन हालात में चौटाला भाजपा में घुसकर अपनी स्थिति को मजबूत करने की सोच सकते हैं। वैसे भी भाजपा व चौटालों में पुरानी खानदानी दोस्ती रही है। देवीलाल व ओमप्रकाश जब भाजपा के साथ गठबंधन करके सरकार चलाते रहे हो तो दुष्यंत की भाजपा में विलय करने से क्यों परहेज होगा, दोनों में कोई वैचारिक मतभेद तो है नहीं, दोनों का ही उद्देश्य येन-केन-परकारेण सत्ता हथियाना व जनता को ठगना ही तो है और फिर इस छोटी सी उम्र में सीएम का पद हाथ लगे तो क्या बुराई है।

लेकिन सत्ता का यह खेल इतना सरल व सीधा भी नहीं है। तब भाजपा में गये जाट दिग्गजों को जाटों ने जीरो कर दिया तो क्या वे दुष्यंत को बख्श देंगे? खासतौर पर जब ओम प्रकाश अब कभी भी जेल से बाहर आ सकते हैं। उनकी संगठन शक्ति का लोहा आज भी माना जाता है। अभय को लेकर जब वे मैदान में उतरेंगे तो दुष्यंत के लिये उनसे निपट पाना आसान नहीं होगा।